द्वितीय अध्याय
मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका एवं उसके विविध स्त्रोत

विद्या पद के अर्थ हैं ज्ञान, विज्ञान, अध्ययन, शिक्षण, दर्शन, कला, शिक्षा और शास्त्र, साहित्य आदि। मनुष्य की प्रतिभा और बुद्धि विद्या पर ही निर्भर है।शिक्षा ऐसा ज्ञान है, जो व्यक्ति की अज्ञानता को मिटाकर ज्ञान की ज्योति जलाता है। वह जिसके पास है, उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर व्यक्तित्व की शोभा बढ़ाता है। शिक्षित व्यक्ति, शिक्षित परिवारों से सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज बनता है।शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपने आपको भावी जीवन के लिए सम्बद्ध करता है तो दूसरी ओर शिक्षा के माध्यम से वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की प्रतिस्थापना की जाती है।

2.1 शिक्षा के मूल स्त्रोत :

शिक्षा शब्द का अर्थ है– ज्ञानार्जन करना, किसी कार्य के योग्य होने या निष्णात होने की इच्छा। परमेश्वर ने पशुओं और मनुष्यों में यह अंतर रखा है कि मनुष्य में पशुओं की अपेक्षा स्वाभाविक ज्ञान अधिक है। पशुओं का जन्म रेगिस्तान में होने पर भी (वहाँ पानी का तालाब तक न देखा हो) वे नदी में छोडते ही तैरने लगते हैं, जबकि नाविक के बेटे को तैरना सिखाना पड़ता है। शिक्षा हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। हम शिक्षा को प्रकाश का स्त्रोत बता सकते हैं, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्शन करती है। शिक्षा एक ज्योति जैसी है जो बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक अनुशासित, नियंत्रित और प्रगतिशील बनाने में सहायता करती है।

शिक्षा ही किसी समाज और राष्ट्र की जागृति का मूल आधार है। अतः शिक्षा का उद्देश्य साक्षरता के साथ–साथ जीवनोपयोगिता भी होना चाहिए। शिक्षा–नीतिसे अभिप्राय शिक्षा में कतिपय सुधारों से होता है जिसका अधिक सम्बन्ध भावी पीढ़ी से होता है। शिक्षा–नीति के द्वारा हम अपने समय के समाज

और राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूर्ण रूप से साथ सिद्ध करने के लिए कुछ अपेक्षित मानसिक और बौद्धिक जागृतिकोतैयार करने लगते हैं। नई शिक्षा का एक विशेष अर्थ है जो हमारी सोच–समझ में हर प्रकार से एक नएपन को ही लाने से तात्पर्य प्रकट करती है।

शिक्षा का अर्थ, परिभाषा एवं उद्देश्य :

शिक्षा शब्द संस्कृत की 'शिक्ष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है – सीखना, अध्ययन करना, ज्ञानार्जन करना। 'शिक्षा' का अंग्रेज़ी अनुवाद 'एजूकेशन' (Education) है। 'एजूकेशन' (Education)शब्द लेटिन भाषा के 'एजूकेटम' (Educatum)शब्द से व्युत्पन्न है।

'एजूकेटम' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– 'ई'(E)और 'केटम' (Catum) । 'ई'(E)का अर्थ है अन्दर से और 'केटम' (Catum)का अर्थ है 'आगे बढ़ना या अग्रसर करना' अर्थात्

' To lead forth'। इसके अतिरिक्त लेटिन भाषा के अन्य दो शब्दों से भी यह संबंधित है –(i)एजूकेट (Educate)जिसका अर्थ है –To bring up, to raise.

(ii)एजूकेयर (Educare)जिसका अर्थ है –To bring forth, to lead out .

शिक्षा का अर्थ है – '' अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना ''

– डॉ. नरेश कुमार[*1]

विदेशीयेषु सर्वप्रसिद्धानां प्लेटो महोदयानां मते –

'' शरीरात्मनोः पूर्णत्वप्रदानमेव शिक्षायाः कार्यं वर्तते '' इति।

" Education is creation of a sound mind in a sound body"- Aristotle[*2]

पं. नेहरू के शब्दों में '' शिक्षा से सन्तुलित मानव का विकास करने और बालकों को समाज के लिए लाभप्रद कार्यों को करने और सामूहिक जीवन में भाग लेने के लिए तैयार करने की आशा की जाती है।''

– जवहरलाल नेहरू[*3]

‘‘ विद्या अमूल्य और अनश्वर धन है। ‘‘ —ग्लैटस्टन[*4]

According to The world book Encyclopedia—

Education is the process by which people acquire knowledge, skills, habits, values or attitudes. The word education is also used to describe the result of the education process.

According to Encyclopedia—

Education, discipline that is concerned mainly with methods of teaching and learning in schools or school like environments as opposed to various informal means of socialization.

शिक्षा का उद्देश्य एवं आदर्श –

- ईश्वर –भक्ति तथा धार्मिकता की भावना का
- चरित्र–निर्माण
- व्यक्तित्व का विकास
- नागरिक तथा सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन
- सामाजिक कुशलता की उन्नति
- राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार

शिक्षा का लक्ष्य और उद्देश्य स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन को बनाये रखना, उसे पुष्ट तथा विकसित करना है।

महात्मा गाँधी के अनुसार, " शिक्षा से अभिप्राय बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण प्रकटीकरण से है।"[*5]

शिक्षा का प्रधानकार्य सांस्कृतिक धरोहर तथा मानव अस्तित्व को कायम रखने के लिए ज्ञान– विज्ञानादि का हस्तांतरण करना है। शिक्षा की प्रक्रिया से ही मानव के भावी जीवन की तैयारी की प्रक्रिया निर्भर है। शिक्षा की व्यवस्था से ही नवसंतति को अतीत की संततियों से जोड़ सकते हैं। समाज के सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षित रखने की प्रक्रिया में उसके इतिहास, साहित्य, ज्ञान–विज्ञान, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक संस्थाओं के संबंध में जानना आवश्यक होता है, यह शिक्षा से ही संभव है। उसके मूल्यों के संरक्षण और प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए उसकापुनरीक्षण करना भी आवश्यक है। इसमें शिक्षा व्यवस्था और भाषा मुख्य भूमिका का निर्वाह करती है। शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा कर्मियों से ही नवीन धाराओं, प्रवृत्तियों और मूल्यों का मूल्यांकन, समन्वयन और भावी पीढ़ी तक उचित रूप में संप्रेषण की सामाजिक ज़िम्मेदारी होती है। जीवन में स्कूली शिक्षा का महत्व और प्रभाव दीर्घगामी होता है। अध्यापक द्वारा कहे गए वचन छात्र के लिए जीवन भर उत्साह और एक ऊर्जा का संचारण करते रहते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान, आदर्शों, आदतों, रुचियों एवं शक्तिओं का विकास करना है जिसके द्वारा उसे अपना उचित स्थान मिल सके और उसका सदुपयोग कर स्वयं तथा समाज को उच्च एवं पवित्र उद्देश्य की ओर ले जाए। बापू के अनुसार शिक्षा में मन, स्वभाव और शरीर के हर प्रकार के बंधन आते हैं। वे व्यक्ति और समाज को अज्ञान, असत्य, द्वेषाग्रह जैसे मानसिक बंधन तथा गरीबी, बीमारी, दुर्बलता और पीड़ा जैसे आर्थिक और शारीरिक बंधनों

से मुक्त कराकर उसका आध्यात्मिक विकास करना चाहते थे, ताकि देश के संपूर्ण विकास के लिए वह अपनी क्षमता के विशाल क्षितिज पर पहुँच सकें। उन्होंने हमें जाति, पथ और क्षेत्र इत्यादि पर आधारित संकीर्णताओं से उभरने को प्रवृत्त किया। शिक्षा में तो भूत, वर्तमान और भविष्य तीनों का हमें ख्याल रखना होगा। शिक्षा तभी प्रभावपूर्ण बन सकती है जब वह उद्देश्यपूर्ण हो। उद्देश्य ज्ञात होने से ही आत्मबल बढ़ता है एवं दृढ़ता आती है जिससे व्यक्ति एकाग्रचित होकर समर्पित भाव से कार्य करता है।

मानव–मस्तिष्क यदि अध्यवसाय तथा लगनशीलता से रेत पर फूल खिला सकता है, तो प्रारम्भिक स्कूलों की झोपड़ियों से भी नव–भारत का स्वर्णिम भविष्य फूट सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा–नीति 1986 द्वारा प्रस्तावित शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार है –

- परम्परागत मूल्यों की रक्षा।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
- मानव संसाधन का विकास।
- समाजवाद के मूल्यों का विकास।
- सम्प्रदाय–निरपेक्षता के मूल्यों का विकास।
- प्रजातन्त्र के मूल्यों का विकास।
- भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता का विकास।
- व्यावसायिक नैतिकता का विकास।
- अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास।

शैक्षिक क्षेत्र में भारतीय नारी :

नारी शील, राष्ट्रीय रक्षा तथा कर्तव्य की खान है। जहाँ स्त्रियों को उचित स्थान दिया जाता है तथा उनकी शिक्षा का भी उचित प्रबंध किया जाता है, वही देश उन्नति कर सकते हैं। राष्ट्र में स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान है, उन्हें सम्मानित

जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाने का साधन शिक्षा ही है जिससे वह समाज में आदर्श प्राप्त कर सकती हैं। शिक्षा के द्वारा नारी अपने आपको भावी जीवन के लिए सम्बद्ध करती है तो दूसरी ओर शिक्षा के माध्यम से वैयक्तिक तौर पर सामाजिक जीवन की प्रतिस्थापना की जाती है।

भरण की आरंभिक स्थिति एक सूक्ष्म बिंदु मात्र होती है। माता की चेतना और काया उसमें प्रवेश परिपक्व बनने की स्थिति तक पहुँचाती है। असमर्थ–अविकसित स्थिति में माता ही एक अवलंबन होती हैं, जो स्तनपान करती और पग–पग पर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। वेदमाता, देवमाता व विश्वमाता के रूप में जिस त्रिपदा की पूजा–अर्चना की जाती है, प्रत्यक्षतः उसे नारी ही कहा जा सकता है।इसलिए स्त्री शिक्षा बहुत आवश्यक है।

मनु महाराज समाज के सच्चे चिन्तक थे। इसलिए उन्होंने मानवता कोसबसे पहले महत्व और स्थान दिया था और नारी को श्रद्धापूर्वक देखते हुए उसे देवी के रूप में मान्यता प्रदान की थी ––

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवत।

अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवगण निवास करते हैं।

इसी से प्रभावित होकर कविवर जयशंकर प्रसाद ने कहा था–

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पगतल में ।
पीयूष–स्त्रोत सी बहा करो।
जीवन के सुन्दर समतल में।

हम इस प्रकार बता सकते हैं कि पारिवारिक गाड़ी के सुसंचालन में स्त्री–पुरुष दो पहिए के स्वरूप हैं। अतः पारस्परिक समझ पैदा करने और उत्तरदायित्व निभाने की दृष्टि से स्त्री–पुरुष दोनों को शिक्षित होना आवश्यक है।

एक पहिया के विपरीत स्थिति में रहने के कारण दाम्पत्यरूपी गाड़ी का सुसंचालन शांतिपूर्ण ढंग से नहीं हो सकेगा।

माता का कलेवर और संस्कार बालक बनकर इस संसार में प्रवेश पाता है और प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाता है। वह मानुषी दीख पड़ते हुए भी वस्तुतः देवी है। उसके नाम के साथ प्रायः देवी शब्द जुड़ा भी रहता है। श्रेष्ठ एवं वरिष्ठ उसी को मानना चाहिए। भाव–संवेदना धर्म–धारणा और सेवा–साधना के रूप में उसी की वरिष्ठता को चरितार्थ होते देखा जाता है। उसके रोम–रोम में कृतज्ञता, श्रद्धा और आराधना का भाव उमड़ते रहना चाहिए। इस कामधेनु का जो जितना अनुग्रह प्राप्त कर सकने में सफल हुआ है उसने उसी अनुपात में प्रतिभा, संपदा, समर्थता और प्रगतिशीलता जैसे वरदानों से अपने को लाभान्वित किया है। नारी प्रेम, स्नेह, करूणा एवं मातृत्व की प्रतिमूर्ति है। शिक्षित नारी परिवार का आभूषण और समाज का गौरव होती है।

नारी शिक्षा की आवश्यकता :

'' कर पदाघात अब मिथ्या के मस्तक पर,
सत्यान्वेषण के पथ पर निकलो नारी ।
तुमबहुत दिनों तक बनी दीप कुटिया की,
अब बनो क्रान्ति की ज्वाला की चिंगारी।''[*6]

पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश के विकास में भारतीय नारी ने बराबर भाग लेतेहुए रूढ़िवादी जीवन को तिलांजलि देकर नवयुग का आह्वान किया। शिक्षा के क्षेत्र भी इसमें शामिल है।

ब्रह्मचर्य–व्रत से सम्पन्न शिक्षित कन्या को ही गृहस्थ–आश्रम में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त था। महिला के शिक्षित होने पर उसके पूरे परिवार को शिक्षा का लाभ मिलता है।जब एक पुरुष शिक्षा पाता है तब वह मात्र शिक्षित होता है परन्तु जब एक नारी शिक्षित होती है, तब वह स्वयं मात्र शिक्षित नहीं

होती बल्कि अपनी पूरी पीढ़ी को भी शिक्षित करती है। शिक्षा, प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ–प्रदर्शन करती है। शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है। इससे ही जीवन में सफलता को प्राप्त करता है।

'' ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है। उससे मनुष्य सभी तत्वों के अर्थों को देखने में समर्थ हो जाता है। उसके सभी विघ्न दूर हो जाते हैं। तीनों लोकों में उसकी सभी प्रवृत्तियाँ सही दिशा में होती है। ''*7

शिक्षा से ही स्त्री का बल, बुद्धि, धैर्य, कार्यदक्षता और चिन्तनशक्ति में वृद्धि होती है। **शिक्षा से परिष्कृत, विकसित और परिपक्व बुद्धि ही स्त्री का बल है। शिक्षा स्त्री को इस लोक में तो सफल बनाती ही है, मृत्यु के बाद मोक्ष भी प्राप्त कराती है।**

नारी शिक्षा का महत्व :

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग स्त्री शिक्षा का महत्व इस प्रकार बताया है कि स्त्री शिक्षा के बिना लोग शिक्षित नहीं हो सकते। महिलाओं के प्रारंभिक और व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करनी चाहिए।

स्त्री पृथ्वी की कल्पलता है ।

आज भी विद्यालयों में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों की संख्या कम ही है। जबकि सभी जानते हैं कि जब भी घर का विकास अच्छा होता है उसमें गृहणी की भूमिका महत्वपूर्ण होती है –

पढ़ी लिखी माता
घर की भाग्य विधाता

इसी प्रकार के नारे वास्तव में महिला शिक्षा की दर को आगे बढ़ाने में बडी कारगर भूमिका निभाते हैं।

महात्मा गाँधी ने भारतीय नारी के आदर्श के विषय में कहा है –

'' नारी त्याग की मूर्ति है। जब वह कोई चीज़ शुद्ध व सही भावना से करती है, तब पहाड़ों को भी हिला देती है। मैंने स्त्री को सेवा और त्याग की भावना का अवतार मानकर उसकी पूजा की है।''*8

शिक्षा के अभाव में महिलाओं का जीवन अनियन्त्रित होकर बिना पतवार की नाव के समान संसार सागर में डोलता रहता है।

'' विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान होने पर भी यदि व्यक्ति में अन्तर्दृष्टि का विकास और आत्म–ज्योति की उपलब्धि नहीं हुई है तो वह व्यक्ति मूर्ख ही है क्योंकि क्रियावान् अर्थात् व्यावहारिक ज्ञान से युक्त व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में शिक्षित है।''*9

नारी–शिक्षा के महत्व की स्वीकारोक्ति के माध्यम से डॉ. राधाकृष्णन्, श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख, हंस मेहता तथा भक्त दर्शन की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग और राष्ट्रीय महिला शिक्षा समितियों का गठन किया गया और उनके द्वारा प्रदान नारी–शिक्षा के उन्नयन सम्बन्धी विचार को कानूनी चोला पहनाकर क्रियान्वित किया गया। विभिन्न आयोगों और परिषदों द्वारा दिये गये तथ्यात्मक विचारों को पाठ्यक्रम में महत्ता प्रदान की गई, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं –

- ❖ स्त्रियों को पुरुषों के समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना चाहिए।
- ❖ शैक्षिणिक पाठ्यक्रम में इस तरह की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे उन्हें श्रेष्ठ माता और सु–गृहिणी बनाया जा सके।
- ❖ बलिकाओं को गृह–अर्थशास्त्र और गृह–प्रबन्ध से सम्बद्ध विषयों की जानकारी दी जानी चाहिए।

- ❖ स्त्रियों के लिए अंशकालीन रोजगारों की व्यवस्था की जाय, ताकि वे पारिवारिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए प्राप्त ज्ञान का अधिक से अधिक लाभ उठा सकें।
- ❖ स्त्री शिक्षा कार्यक्रम को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग माना जाय, इत्यादि।

सरकारों ने लड़कियों की शिक्षा में सुधार लाने के लिए उन्हें अनेक प्रकार की सुविधायें देने की व्यवस्था की है। उस व्यवस्था के अन्तर्गत उनका शिक्षा शुल्क मुफत करना, उनकी शिक्षा को पूरी तरह मुफत बनाना, उन्हें वर्दियाँ, खाना, साईकिल, पुस्तके अपने स्तर पर उपलब्ध करवाना, अनेक तरह की छात्रवृत्तियाँ प्रदान करना उन्हें शिक्षा प्राप्ति के लिए उत्साहित करने में मुख्य प्रयासों में गिने जा सकते हैं। लड़कियों की शिक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए गाँवों, शहरों तथा नगरों में विशिष्ट शिक्षा संस्थानों, नर्सिंग, मैडीकल इंजीनियरिंग कॉलेजों का खोलना भी विशिष्ट प्रयासों का ही प्रमाण है। लड़कियों को शिक्षा प्राप्ति के अवसर प्राप्त हों तो वे कहीं आगे निकल सकती हैं।

स्त्री के लिए शिक्षा प्रकाश का वह स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ–प्रदर्शन करती है। नारी के लिए शिक्षा प्रमुख साधन है। यदि भावी–जीवन की आधारशिला गंभीर हो तो उस पर जो भवन खड़ा होगा वह स्थायी रहेगा। आज की शिक्षित नारी समय और शिक्षा दोनों के महत्व को जानती है। शिक्षा से ही आज प्रत्येक क्षेत्र में नारी की सक्रिय भूमिका देश के निर्माण में लगी है। वर्तमान समय में नारियाँ ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर अपने आपको निरूपित किया हैं। आज की नारी ने अपनी शक्ति को पहचाना है।

" शिक्षित नारी , देश की उजियाली "

2.2 शिक्षा – मानव जीवन की नींव :

जिस प्रकार प्रकृति का सौन्दर्य सृष्टिकर्ता की तूलिका का चित्रांकन है उसी प्रकार मानव–सौंन्दर्य सृष्टिकर्ता की तूलिका का चित्रांकन है उसी प्रकार मानव–सौन्दर्य के चित्रांकन की तूलिका शिक्षा है। सूक्तियाँ कहती है –

साहित्य संगीत कला विहीनः
साक्षात् पशु पुच्छ, विषाण हीनः ।

अर्थात् शिक्षा विहीन मानव का जीवन अधूरा है। वह बिना सींग–पूँछ का साक्षात पशु है।

विद्या पद की निष्पत्ति विद् धातु से होती है। इसका अर्थ है– ज्ञान प्राप्त करना। अतः विद्या पद के अर्थ हैं ज्ञान, विज्ञान, अध्ययन, शिक्षण, दर्शन, कला, शिक्षा और शास्त्र, साहित्य आदि। मनुष्य की प्रतिभा और बुद्धि विद्या पर ही निर्भर है। मनु ने विद्याध्ययन के संबंध में योग्य उपदेश दिया है–

'' जहाँ धर्म और अर्थ न हो, जहाँ सेवा की भावना न हो, वहाँ विद्या का प्रवचन नहीं करना चाहिए। यह ऐसा ही है, जैसा कि ऊसर खेत में उत्तम बीज बोना। ब्रह्मचारी अध्यापक चाहे विद्या के साथ मर जावे और घोर आपत्ति का समय हो, तो भी अयोग्य को विद्या न देवे। विद्या ने ब्राह्मण के पास आकर कहा कि मैं तुम्हारी निधि हूँ। तुम मेरी रक्षा करो। ईर्ष्यालु व्यक्ति को मुझे मत दो। इससे मेरी शक्ति में वृद्धि होगी। जिसको तुम पवित्र समझो, नियम पालन करने वाला ब्रह्मचारी समझो, उसी को मुझे दो। प्रमाद से रहित व्यक्ति ही मेरा रक्षा कर सकता है। ''*10

राष्ट्र और समाज के सुखद भविष्य की कल्पनाओं को साकार रूप देने का सर्वाधिक सशक्त साधन शिक्षा ही है। हजारों साल तमिल के महान् कवि तिरुवल्लुवर ने शिक्षा के महत्व को समझाकर इसे सर्वश्रेष्ठ धन बताते हुए कहा था–

शिक्षा धन है मनुजु हित, अक्षय और यथ्रष्ट ।

अन्य सभी संपत्तियाँ, होती हैं नहीं श्रेष्ठ।।[*11]

शिक्षा के महत्व को समझते हुए ही हमारे संविधान में यह निश्चय किया कि 14 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा देने की व्यवस्थाकरें। महिलाओं के बीच साक्षरता अभियान की सबसे अधिक आवश्यकता है।

'' शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के मन को मुक्त करना है, न कि उसे बाँध हुए चौखटों में बन्द करना है। उसके शारिरिक और बौद्धिक श्रम में सन्तुलन बनाना है ताकि उसका जीवन सर्वांगीण विकास कर सके। ''

– जवाहरलाला नेहरू[*12]

आज से करीब दो हजार वर्ष पहले तमिल के महाकवि तिरूवल्लुवर ने अपने ग्रंथ '' तिरूक्कुरल '' में मनुष्य के लिए शिक्षा का महत्व बताते हुए लिखा था :

अक्षर कहते हैं जिसे, जिसको कहते आँक ।

दोनों जीवित मनुज के, कहलाते हैं आँख ।।

(ऍण्णेन्य एनै एषुत्तन्ब इवविरण्डुम्

कण्णन्ब वाषुम् उयिर्क्कु)

यह आँख प्रकाश का, ज्योति का, ज्ञान का प्रतीक है । हमारी संस्कृति ज्योति की आराधना करनेवाली संस्कृति है।

शिक्षा द्वारा व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा के द्वारा ज्ञान की उपलब्धि होती है। शिक्षा सतत लेना और देना है, यह प्रगतिशील मानव की आवश्यकता है और यह भी सच है कि शिक्षण केवल स्कूल की चार दिवारों में नहीं दिया जाता। **शिक्षा को ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थियों में नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का विकास कर सके, जो विद्यार्थियों में सत्य, त्याग, प्रेम, अहिंसा, क्षमा, करूणा और राष्ट्रीय सेवा जैसे महान गुणों का संचार कर सके। ये**

गुण ही हमारी संस्कृति के आधार रहे हैं, और इन्हें ही देश के नागरिकों के चरित्र का आधार बनाकर राष्ट्रीय पुनर्निमाण का कार्य किया जा सकता है।

Alvin Tofflerकहते हैं, Education in 21st Century is not just about literacy. Its rather about learning, unlearning and Relearning.

शिक्षा से जीवन बनता है, संवरता है और नए निर्माण के क्षितिज उन्मुक्त होते हैं।

शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को भी सुसंस्कृत बनाती है।

शिक्षा की आवश्यकता को हम इस प्रकार बता सकते हैं–

विद्यार्थियों को हम राष्ट्र का निर्माण बता सकते हैं। हमारे देश के भलाई के लिए जो कुछ अच्छा लगा है, उसकी सुरक्षा करने के साथ ही निर्भीकता से उन सभी अनगिनत बुराइयों से समाज को मुक्त करना चाहिए। उन्हें लाखों मूक लोगों के लिए सक्रियता से काम करना चाहिए। विद्यार्थियों से किसी भी कार्य को प्रांत, नगर, वर्ग और जाति के रूप में सोचने के बदले विश्व के रूप में सोचना–सीखना चाहिए।

शिक्षा गतिशील है तथा उसका कार्यक्षेत्र भी अत्यन्त व्यापक है। शिक्षा का महत्व यह है कि वह व्यक्ति को इस योग्य बनाती है जिससे वह परिस्थितियों के अनुरूप अपने जीवन व समाज के लिए उचित कार्यों को उचित समय पर कर सके। मनुष्य अपने समाज और देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपने कार्यों का उचित चयन कर सके। ये कार्य, देश, काल एवं परिस्थियों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं।

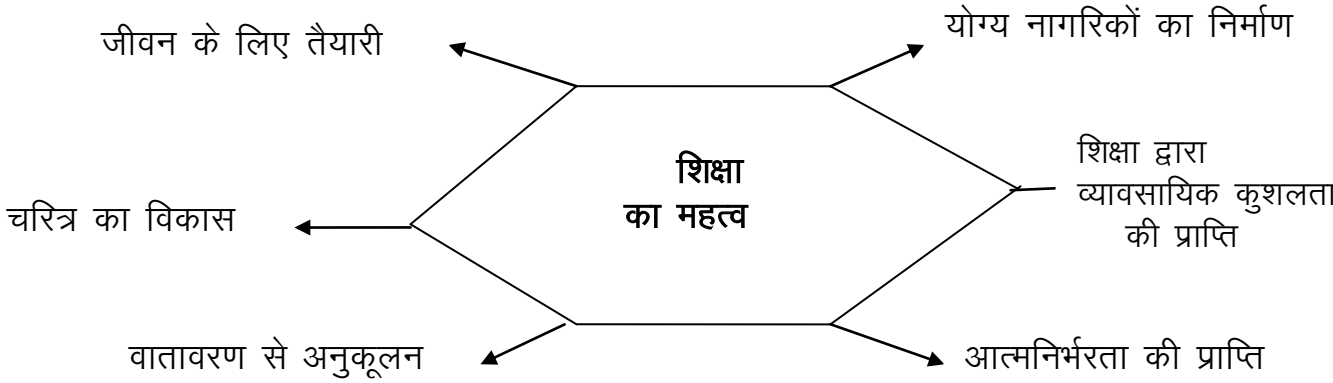

शिक्षा का महत्व

- **जीवन के लिए तैयारी :**

ज़िंदगी में आगे बढ़ना है, इसके लिए छात्रों को अनेक कठिनाइयों व समस्याओं का मुकाबला करना होगा, उसे जीवन में अनेक संघर्ष करने होंगे तथा चुनौतियों का सामना करना होगा। इसमें सफल होने के लिए शिक्षा ही उसे योग्य बनाता है।

- **योग्य नागरिकों का निर्माणः**

श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण करना ही शिक्षा का एक आवश्यक तत्व है जिससे प्रजातान्त्रिक व्यवस्था में भी आगे बढ़ सकता है। शिक्षा छात्रों में देश–प्रेम, अनुशासन, सहनशीलता, सहयोग, स्पष्ट विचार आदि गुणों का विकास होगा।

- **शिक्षा द्वारा व्यावसायिक कुशलता की प्राप्ति :**

व्यवसायिक कुशलता के लिए हमारे देश में अधिकांश छात्र वैज्ञानिक, इन्जीनियर व शिल्पी बनें। शिक्षा का कार्य छात्रों को व्यावसायिक कुशलता की

प्राप्ति में भी योग देना है। इसका लाभ यह है कि एक ओर तो उत्पादन में वृद्धि होगी तथा दूसरी ओर बेरोजगारी मिटेगी।

➢ **आत्मनिर्भरता की प्राप्ति :**

मानव जीवन में शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने में मदद देती है। वही व्यक्ति अपने कार्यों को भी सफलतापूर्वक कर सकता है तथा अपना भार स्वयं अपने ऊपर लेता है तथा समाज का भी हित कर सकता है।

➢ **वातावरण से अनुकूलन :**

प्राकृतिक वातावरण तथा सामाजिक वातावरण को अनुकूल बनाने से ही व्यक्ति

अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। यह शिक्षा से ही संभव है।

➢ **चरित्र का विकास :**

दैनिक जीवन में चरित्र का विकास परमावश्यक है। शिक्षा से ही छात्रों में नैतिकता का समावेश हो सकता है।

हरबर्ट के शब्दों में,"शिक्षा का कार्य उत्तम नैतिक चरित्र का विकास करना है।"*13

अ. व्यक्तित्व निर्माण एवं सर्वांगीण विकास का सशक्त साधनः शिक्षा

शिक्षा ज्ञान का आधार है। ज्ञान प्राप्त करना एक सतत प्रक्रिया है। शिक्षा केवल विद्यार्थी ही प्राप्त नहीं करता अपितु हर व्यक्ति आजीवन शिक्षा प्राप्त करता रहता है। सीखने की प्रक्रिया आजीवन चलती रहती हैं बालक तो एक खाली घड़ा नहीं है, वह कमल के समान बड़ा ही सुकोमल और मनभावन पुष्प है जो सूर्य की पहली किरण के साथ खिलकर अपनी मंद मुस्कान चहुं ओर बिखेरता रहता है।

प्राथमिक शिक्षा ही वह नींव है जिस पर शिक्षा जगत की विशाल इमारत टिकी हुई है। — राजेन्द्र कुमार शर्मा*14

प्राथमिक शिक्षा यदि सुदृढ़ है तो शिक्षा जगत की सम्पूर्ण इमारत चिरकाल तक अपनी मजबूती और सौन्दर्य बनाए रख सकती है। शिक्षा में गुणवत्ता का सवाल तो प्राथमिक शिक्षा पर ही निर्भर है। अतीत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का अध्ययन करें तो पाएगे कि शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना था।शिक्षा का उद्देश्य है कि बालक शिक्षा प्राप्त करके स्वावलम्बी व संस्कारी बने।

सर्वांगीण विकास का अर्थ यही है कि शिक्षा के द्वारा जीवन के सभी अंगों का विकास किया जाए और उसी के माध्यम से व्यक्ति का जीवन पूर्णता की ओर बढ़े। अर्थात् शिक्षा किसी एक अंग का ही नहीं, एक क्षेत्र का ही नहीं अपितु सभी क्षेत्रों का विकास एक साथ करे।

सर्वमान्य उद्देश्य उसी उद्देश्य को कहा जा सकता है जिसका अनुकरण करने से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावात्मक विकास हो सके। इस आदर्श के उद्देश्य के अनुसार शिक्षा प्रदान करके व्यक्ति को सर्वांगीण विकास होने की पूरी–पूरी सम्भावना है।

शिक्षा किसी व्यवस्थित रूप में ज्ञान या विज्ञान का नाम है। इससे मनुष्य के चारित्रिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा एक ऐसा वृक्ष है जिस पर शिष्टचार और सदाचार के फूल खिलते हैं।

शिक्षा किसी व्यवस्थित रूप में ज्ञान या विज्ञान का नाम है। इससे मनुष्य के चारित्रिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा एक ऐसा वृक्ष है जिस पर शिष्टचार और सदाचार के फूल खिलते हैं। तथा जिस पर विनम्रता के फल लगते हैं। शिक्षा के बौद्धिक एवं भौतिक, इन दोनों फलों के मधुर रस में नैतिकता की वृद्धि होती है।

"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् विद्या वह है जो व्यक्ति की क्षमता को संकुचित दायरे से निकालती है और उसकी चुनौती को अज्ञान, ईर्ष्या और संकीर्णता से मुक्त करते हैं। शिक्षा व्यक्ति की ऊर्जा को केंद्रित करके उसे और अधिक क्षमतावान तो बनाता ही है। शिक्षा के द्वारा बालकों के चरित्र निर्माण के लिए सुसंस्कारपूर्ण कहानियाँ सुनाई जानी चाहिए ताकि वे निर्भय, सत्यवादी और बलिष्ठ बन सकें। बालक गुरुजनों एवं बड़ों के आगे विनयी, नम्र एवं आज्ञाकारी हो। शिक्षा से ही विद्यार्थियों में सत्य, त्याग, प्रेम, अहिंसा, क्षमा, करुणा और राष्ट्रीय सेवा जैसे महान् गुणों का संचार कर सके। ये गुण ही हमारी संस्कृति के आधार रहे हैं और इन्हें ही देश के नागरिकों के चरित्र को आधार बनाकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का कार्य किया जा सकता है। शिक्षा दो तटवाली नदी की तरह है। उसमें एक तो वह पक्ष है जिसमें वह जीवन के मूल्य ग्रहण करता है, जीवन के मूल्यों को आत्मसात करता है। दूसरा पक्ष अर्थोपार्जन का है। अपनी संस्कृति में जीवन के जो मूल्य हैं, बहुत अच्छे हैं, उदात्त हैं, जिनसे उसका चरित्र बनता है और वह मनुष्य कहलाने योग्य बनता है।

संसार के किसी भी महान् जादूगर के पास ऐसा कोई जादू नहीं कि वह वटवृक्ष के सूक्ष्म बीज से तत्काल स्थायी, घना छायादार पेड़ बना दे। इस प्रकार के वृक्ष के लिए यथा उत्तम बीज, उपजाऊ भूमि, आवश्यकतानुसार सिंचाई उपयुक्त और समयानुसार देखभाल आदि की आवश्यकता होती है वैसे ही हमें शिक्षा से भावी पीढ़ी के उज्जवल, मंगलमय, सुखद भविष्य के लिए आशा करना है। उसके साथ ही मानवीय संवेदनशीलता व ऊष्मायुक्त स्नेह देने की आवश्यकता है।

शिक्षा द्वारा तो प्राप्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में होती है। शिक्षा प्रत्यक्ष रूप में तो सफल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि करती है और परोक्ष रूप मे व्यक्ति की योग्यताओं को बढ़ाकर एवं व्यक्तित्व में सुधार लाकर अच्छे प्रतिफल प्राप्त करती

है। उदाहरणार्थ गृह विज्ञान की शिक्षा छात्राओं को गृह प्रबन्ध के कौशल सिखाती है। इसके बाद विवाह होने पर छात्राएँ अच्छे तरीके से परिवार चलाती हैं, और फिर अच्छे परिवार अच्छे बच्चे तैयार कराते हैं जो राष्ट्र के लिए सम्पत्ति बन जाते हैं। इसमें कुछ कौशल तो इतने आधारभूत होते हैं कि वे प्रत्येक बच्चे द्वारा सीख जाने चाहिए। बच्चे पूर्ण नागरिक के रूप में विकसित होने के लिए पढ़ना, लिखना और गणना के कौशल सीखे । इस प्रकार और भी अन्य कौशल हैं जो सभी व्यक्तियों में अपेक्षित हैं। प्रारम्भिक शिक्षा पर ही ये न्यूनतम आधारभूत कौशल सिखाने की जिम्मेदारी है। इसलिए भारतीय संविधान में निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का उपबंध रखा है।

विकास में शिक्षा का महत्व :

जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा वह साधन है जो समाज को केवल शिक्षित ही नहीं करती वरन् व्यक्ति के आत्मीय विकास में भी अहम योगदान निभाती है। शिक्षा परिवार एवं समाज की दिशा और दशा निर्धारित करती है। हमारे जीवन में सबसे अधिक मधुर तथा सुनहरी अवस्था विद्यार्थी जीवन ही होता है। विद्यार्थी जीवन को ही जीवन की नींव कहा जा सकता है। भली प्रकार विद्या ग्रहण करना विद्यार्थी का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए। विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह अपने विकास के लिए पूरा–पूरा यत्न करें। अनुशासन प्रियता, नियमित समय पर काम करना, उदारता, दूसरों की सहायता करना, सच्ची मित्रता, पुरूषार्थ, सत्यवादिता नीतिज्ञता, देश भक्ति, विनोद–प्रियता आदि गुणों से विद्यार्थी का जीवन उज्जवल हो जाता है।

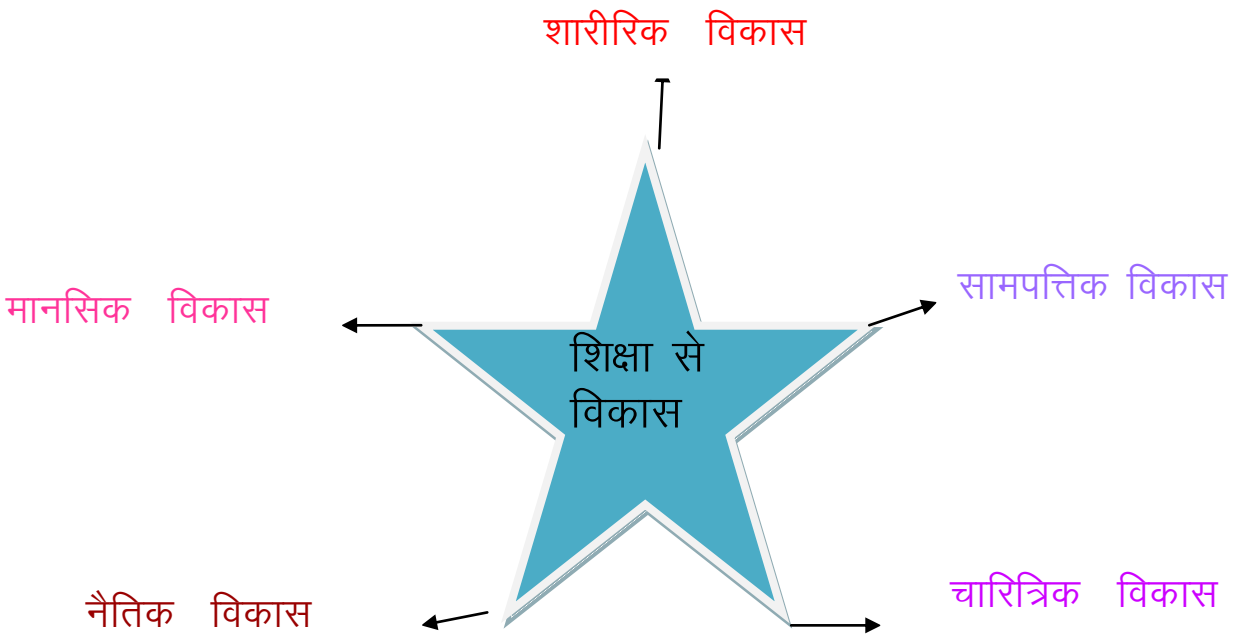

शिक्षित व्यक्ति ही समाज एवं देश में अपनी पहचान बनाता है। शिक्षा मनुष्य को जीवन से जटिल समस्या से निपटने की ताकत प्रदान करती है। अतः शिक्षा व्यक्ति को एक सभ्य प्राणी बनाती है। शिक्षा हमें अपने देश में तो जीना सिखाती ही है बल्कि अन्य देशों में रहने की सभ्यता प्रदान करती है। अतः शिक्षा वह रोशनी है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उत्तरदायी व्यक्ति एवं देश का महान चरित्रसम्पन्न नागरिक बनकर समाज के सम्पूर्ण विकास में अपनी शक्ति की चरम सीमा तक प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित तथा पुनर्स्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से विलीन करता है उनके रोम–रोम में राष्ट्रप्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाती है। ऐसे परिपक्व और मजबूत बालक न केवल देश का नाम रोशन करते हैं बल्कि समूचे संसार के लिए प्रकाशवान साबित होते हैं।शिक्षा मानवीय जीवन में व्यक्ति को जहाँ एक ओर वातावरण से अनुकुलन करने तथा उसमें जरूरत के हिसाब से भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करने

चरित्रवान, बुद्धिमान, वीर तथा साहसी उत्तम नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर उसका सम्पूर्ण विकास करती है वहाँ दूसरी ओर शिक्षा राष्ट्रीय जीवन में व्यक्ति के अन्दर राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता, सामाजिक कुशलता तथाराष्ट्रीय अनुशासन आदि भावनाओं को विकसित करके उसे इस योग्य बना देती है कि वह सामाजिक कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देने के लिए ओत–प्रोत हो जाता है। शारीरिक, मानसिक, साम्पत्तिक, चारित्रिक तथा नैतिक अभ्युदय तथा परलोक में परम निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है। गीता में श्री कृष्ण ने '' आध्यात्म विद्यायाम्'' कहकर जीवन विद्या को सर्वोच्च स्थान दिया है।

ब.शिक्षा का सामाजिक दायित्व :

शिक्षा और समाज का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा की क्रिया, समाज की क्रिया के अन्तर्गत होती है।

शिक्षा में दिव्य श्रद्धा है। बिन्दू में ही सिन्धु समा हुआ है। शिक्षा ही समाज का दर्पण है। कक्षा में ही राष्ट्र का निर्माण होता है। विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक द्विज हैं, पुरोहित हैं और मानव– निर्माण– यज्ञ के पुरोधा हैं। उनकी उन्नति से ही राष्ट्रोन्नति संभव है और उनके पतन में समाज और देश का पतन निहित है। समाज का रूप परिवर्तित हो जाता है तो शिक्षा का रूप भी परिवर्तित हो जाता है। शिक्षा के कारण सामाजिक परिवर्तन होता है।

समाज में घटित परिवर्तनों से शिक्षा पर प्रभाव –

i)शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से हुआ।

ii)शिक्षा में विभिन्न नए पाठ्यक्रम लागू किए गए।

iii)शिक्षा का आधुनिकीकरण हुआ।

iv)समाज की आर्थिक उन्नति के कारण शिक्षा में नए–नए मूल्यांकन साधन जुटाए गए।

v)सार्वभौमिक एवं निःशुल्क शिक्षा पर बल दिया गया।

समाज द्वारा सभ्यता एवं संस्कृति का पोषण होता है। इसलिए बच्चों को समाज के हित के लिए तैयार करना आवश्यक है। शिक्षा प्राप्त करते–करते वह व्यष्टि से समष्टि की ओर विकसित होता है। तभी सामाजिक विकास हो पाता है। शिक्षा ही एक सामाजिक इकाई है। ईंधन ही ज्योति को तीव्र कर सकती है।

सामाजिक परिवर्तन द्वारा शिक्षाः

- ❖ लोगों को अपनी शिक्षा सम्बन्धी अभावों की कमियों का अनुभव कराना।
- ❖ धर्मनिरपेक्षतावादी तथा भावात्मक एकतावादी बनाने में सहायक।
- ❖ परिवर्तन का विश्लेषण करना।
- ❖ शिक्षा के उद्देश्यों को पुनःनिर्धारित करना।
- ❖ मानवीय गुणों का विकास।
- ❖ राष्ट्रीय एकता एवं आर्थिक वृद्धि।
- ❖ विभिन्न व्यवसाय के लिए आवश्यक प्रशिक्षण देना।

स.शिक्षा के विभिन्न आयामः

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे जीवन सदैव विकसित और परिष्कृत होता रहता है। शिक्षा के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शैक्षणिक वातावरण, शिक्षण–विधियों तथा शिक्षा प्राप्त करने के विविध साधनों का प्रगतिशील होना अत्यन्त आवश्यक है। रोशनी (शिक्षा) फैलाने के दो तरीके हैं– या तो खुद दीपक बन जाएँ या फिर उसके प्रकाश को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण। शिक्षित व्यक्ति अपनी शिक्षा का उपयोग अपनी समस्याओं को सुलझाने के साथ ही अपने अनुभवों का लाभ दूसरों को देता रहता है। शिक्षा से बौद्धिक विकास के साथ–साथ सांस्कृतिक विकास भी होता है। इच्छुक व्यक्तियों के

लिए अनवरत शिक्षा का आयोजन किया है। इसे ''सतत् शिक्षा'' या निरन्तर शिक्षा भी बताते हैं। इसके लिए सार्वजनिक पुस्तकालय, निजी पुस्तकालय तथा व्यक्ति के कार्य–स्थल पर विभागीय पुस्तकालय की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

राष्ट्रीय विकास के लिए नागरिकों को सभी क्षेत्रों में विकसित होना चाहिए। कुछ लोग बिलकुल भी पढ़ने में रुचि नहीं रखते परंतु कुछ तो कभी–कभी पढ़ने के बारे में सोचते हैं। व्यक्ति चाहे जिस क्षेत्र में कार्य करता हो, उसके पास कुछ समय अवश्य ही ऐसा बचता है जिसका वह सदुपयोग करके अपने ज्ञान अथवा अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्न कर सकता है। अवकाश का समय तो जल–धारा की तरह बहता चलता है जिसपर कोई नियन्त्रण नहीं रहता। इस पर नियन्त्रण रखने के लिए नहर निकालते हैं। इस जल का उपयोग खेत, बाग के लिए तथा अन्य कार्यों के लिए करते हैं। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। वैसे ही अनवरत शिक्षा की प्रत्येक को आवश्यकता है।

विकासशील देशों के जैसे हमारे देश में शिक्षा प्राप्त नहीं करते हैं। कुछ तो अपनी विषम परिस्थितियों के कारण शिक्षा बीच में छोड़ देते हैं। इस संदर्भ में अनवरत शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है। अगर पढ़ाई छोड़ देने वाले को आगे पढ़ने के लिए सुविधा मिले तो अपने व्यवसाय में लग जाने के बाद भी व्यक्ति अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाता रहेगा। अतः सरकार का यह कर्तव्य होता है पढ़ाई बीच में छोड़ने वाले व्यक्ति और अर्द्ध–शिक्षित व्यक्तियों की अग्रिम शिक्षा के लिए सुविधा का आयोजन करें। इससे केवल व्यक्ति विशेष ही लाभान्वित नहीं होंगे, बल्कि पूरा राष्ट्र समृद्धतर होगा।

निरक्षरों तथा अर्द्धसाक्षरों हेतु अनवरत शिक्षाः

देश के विभिन्न स्थानों में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र और प्राथमिक शिक्षा केन्द्र भी उपलब्ध है। इन केन्द्रों के लिए अलग–अलग धनराशि निर्धारित की गई है। इसे बनाए रखने के लिए छोटे–छोटे पुस्तकालय तथा रेडियो तथा दूरदर्शन केन्द्र खोले गए। 1977 में जनता पार्टी के शासन–काल में प्राथमिक और प्रौढ़ शिक्षा –केन्द्रों को पुनर्जीवित करने के लिए प्रयास किया है। ''केन्द्रीय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग '' ने इस कार्य को राष्ट्रीय सेवा योजना को सौंप दिया गया।

इसके अलावा प्रौढ़ शिक्षा के द्वारा भी व्यवस्था हो जाती है। प्रौढ़ शिक्षा के लिए पुस्तकें भी बहुत कम है। हमारे देश में पौढ़ों के लिए अब ज्ञानवर्द्धक साहित्य प्रकाशित होने लगा है।

2.3 शिक्षा जगत में जनसंचार की भूमिका :

आधुनिक समाज में सूचना के अभाव में व्यक्ति शेष विश्व से कट जाता है, अलग–थलग पड़ जाता है। भारतीय समाज के पास अपनी लोक कथाओं, लोक नृत्यों, लोक गीतों, महाकाव्यों, आल्हाओं और नाटकों का विपुल भण्डार है, जिसका इस्तेमाल जनता को शिक्षित करने के लिए किया जा सकता है। परम्परागत जनसंचार माध्यम आम जनता के लिए लोकप्रिय मनोरंजन के स्त्रोत रहे हैं। भारत में ग्रामीण जनता तक विकास सम्बन्धी संदेश पहुँचाने में ये माध्यम अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रहे हैं और उन्होंने अतीत में लोगों के नज़रिए को विशेष रूप से प्रभावित किया हैं । ज्ञान की वृद्धि के लिए आधुनिक जनसंचार माध्यमों को प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया जा सकता है। हमारे देश में साक्षरता का स्तर भी बहुत नीचे हैं, जबकि ये भी अधिकतर इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों के लिए एक बुनियादी ज़रूरत है। आधुनिक जनसंचार माध्यम राष्ट्र के विकास में मदद करता है और मार्गदर्शन भी करते रहते हैं। विकास के

लिए जनसंचार माध्यमों के उपयोग के हमारे पिछले अनुभव और शोध यह साबित करते हैं कि इन माध्यमों में लोगों को शिक्षित करने और उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करने की असीम क्षमता है। नए विचार और सूचनाएँ देने के साथ–साथ मनोरंजन और मनबहलाव का भी साधन हैं।

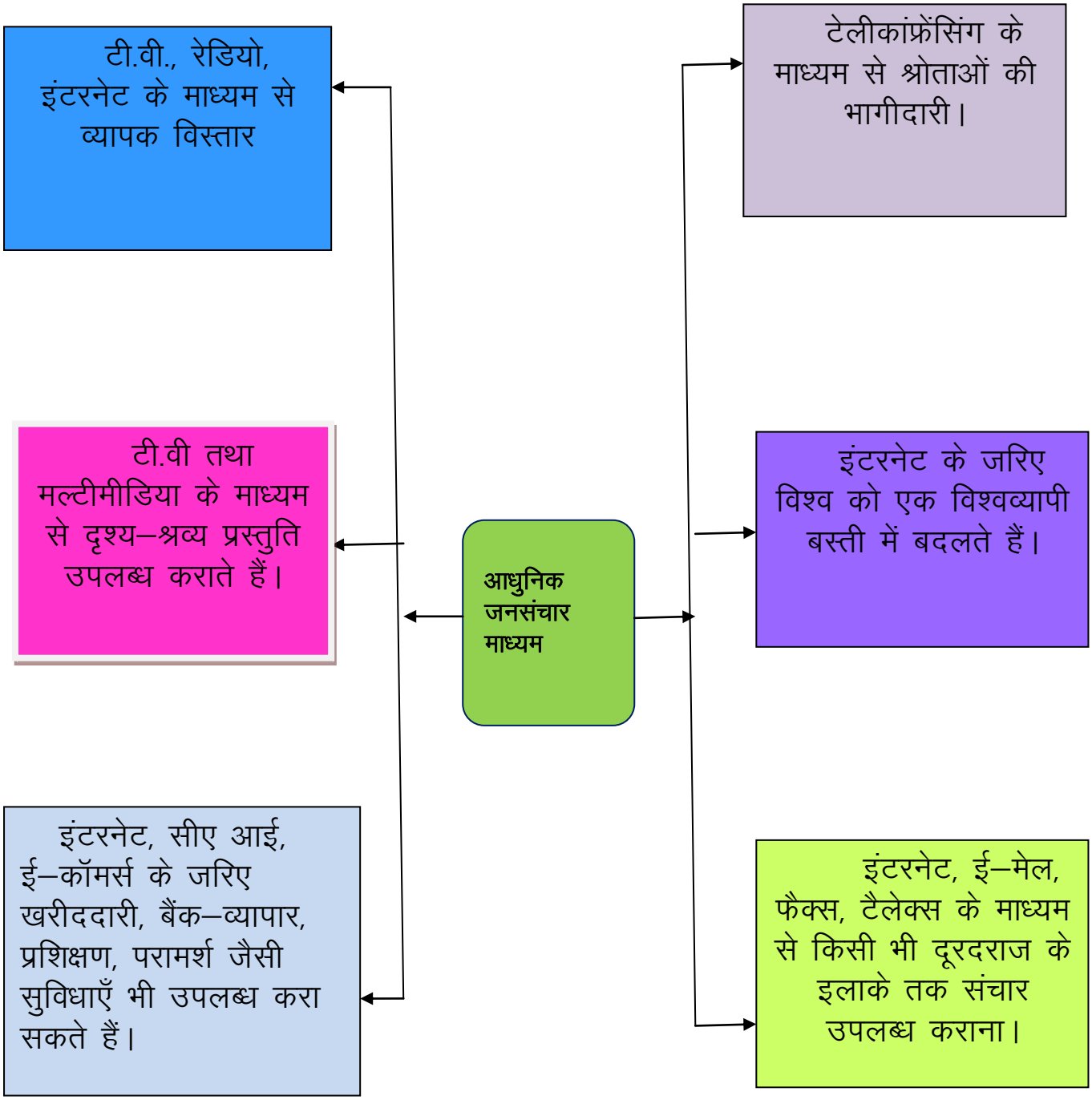

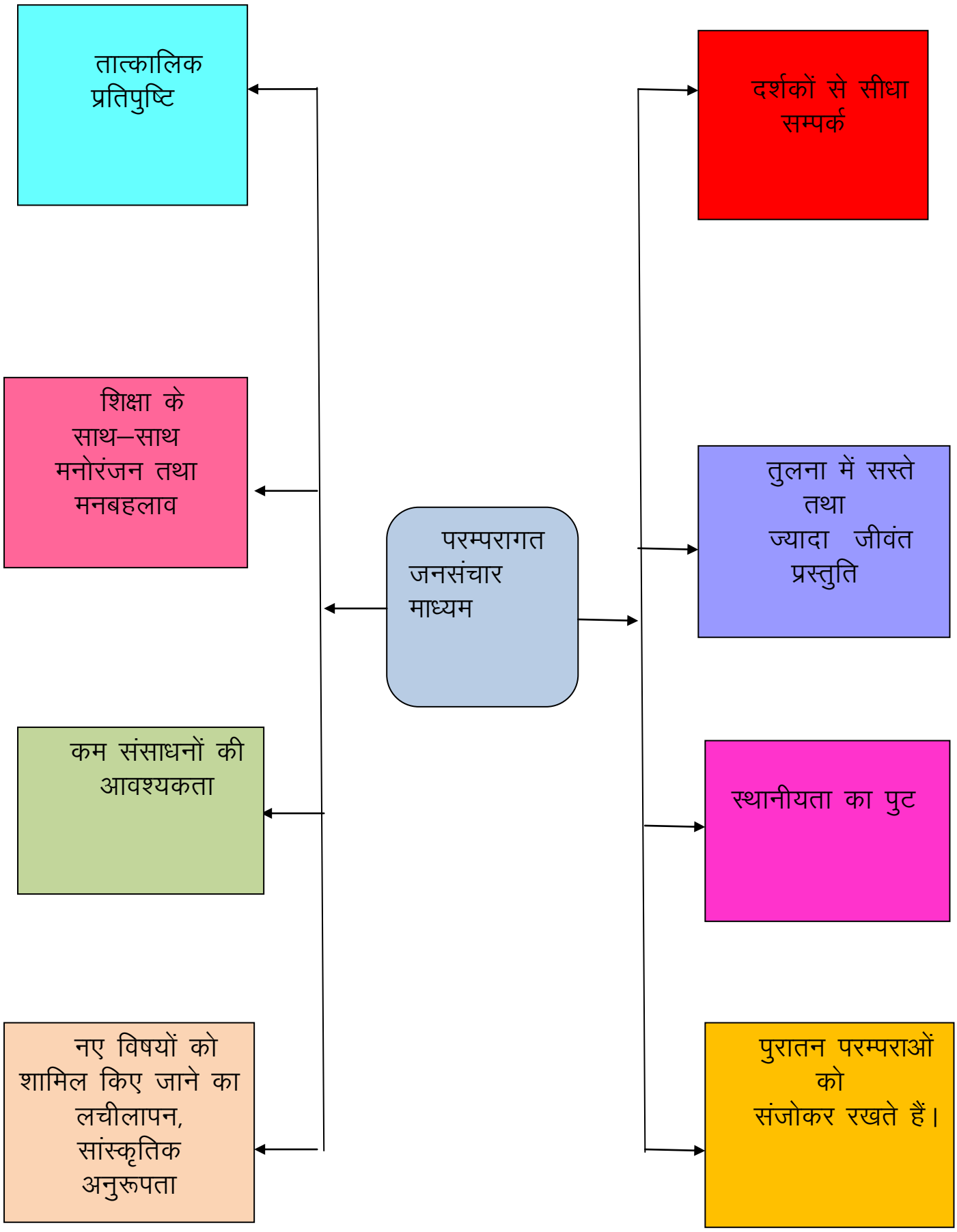
तात्कालिक प्रतिपुष्टि
दर्शकों से सीधा सम्पर्क
शिक्षा के साथ–साथ मनोरंजन तथा मनबहलाव
परम्परागत जनसंचार माध्यम
तुलना में सस्ते तथा ज्यादा जीवंत प्रस्तुति
कम संसाधनों की आवश्यकता
स्थानीयता का पुट
नए विषयों को शामिल किए जाने का लचीलापन, सांस्कृतिक अनुरूपता
पुरातन परम्पराओं को संजोकर रखते हैं।

जनसंचार माध्यमों को सामान्य रूप से दो भागों में बाँटा जा सकता है –

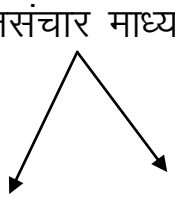

प्रिंट (मुद्रित) माध्यम इलैक्ट्रॉनिक माध्यम

अ.प्रिंटमीडिया के संदर्भ में :–

इसमें मुख्य रूप से पत्र एवं पत्रिकाएँ शामिल हैं। शिक्षण में समाचार–पत्र तथा जनरल और पीरियोडिकल्स (Journal and periodicals) का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे देश में शिक्षा की व्यवस्था में समय–समय पर परिवर्तन होता रहा है तथा उसे अधिकाधिक समाजोपयोगी तथा उद्देश्यपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है। हमारे देश में विभिन्न योजनाओं को बनाते समय भी शिक्षा में सुधार की ओर ध्यान दिया जाता रहा है। शिक्षा ने पत्र–पत्रिकाओं के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है। इनसे छात्रों को तत्कालीन घटनाओं एवं सूचनाओं की प्राप्ति भी होती है। ये पाठ्यपुस्तकों में संचित ज्ञानराशि को नवीन एवं पूर्ण बनाने के कार्य करती है। इसके अतिरिक्त ये छात्रोंके विभिन्न समस्याओं का आलोचनात्मक अध्ययन कराती हैं। इससे ही छात्रों के मानसिक अन्तरिक्ष को व्यापक एवं वैज्ञानिक बनाया जाता है।

शिक्षा का पत्रकारिता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। दोनों के उद्देश्यों में भी समानता है। जहाँ पत्रकारिता शिक्षा और सूचना का सार्थक माध्यम है वहीं शिक्षा का भी यही उद्देश्य है। शिक्षा जगत की विकासमान् प्रवृत्तियों के प्रति 'आम जन' की भागीदारी तब ही सम्भव है जब पत्रकारिता का समुचित विकास हो सके। शिक्षा जगत् में आज देश का बहुत बड़ा वर्ग जुड़ा है। देश भर में विद्यालयों, महाविद्यालयों, तकनीकी शिक्षण संस्थानों आदि से न सिर्फ हजारों शिक्षक जुड़े हुए हैं वरन् लाखों विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माण भी वहाँ हो रहा

है जिनके हाथों में भावी भारत की बगडोर सुरक्षित ही है। इसके बारे में पत्रकारिता द्वारा ही सूचना मिलती है। केन्द्र एवं राज्य सरकारों के बजट का बहुत बड़ा भाग शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है। शिक्षा से संबंधित समाचारों में गम्भीरता तथा वैचारिकता को भी समाविष्ट किया जाना चाहिए। शिक्षा जगत् के घपलों तथा भ्रष्टाचार को भी उजागर करने का दायित्व संवाददाता पर ही है।

हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था, शिक्षा नीति आदि गम्भीर विषयों पर भी विचारोत्तेजक चर्चा समाचार–पत्रों में अलग कालमों के माध्यम से होती रही है। परीक्षा फलों के प्रकाशन को भी इसी श्रेणी में ही रखा है। विश्वविद्यालय की प्रायः सभी परीक्षाओं के परिणामों को भी समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया। शिक्षा से संबंधित विचार–विमर्शों के समाचार भी जनरुचि की दृष्टि से उपयोगी होते हैं।शिक्षा विषयक नियमित स्तम्भ नवभारत टाइम्स में ही प्रति शनिवार में प्रकाशित किया जाता रहा।

ब.इलैक्ट्रानिक मीडिया के संदर्भ में :

इलैक्ट्रानिक माध्यम में मुख्य रूप से रेडियो, दूरदर्शन, संगणक आदि आते हैं जिनका प्रचार प्रसार क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है।

रेडियो :

आकाशवाणी जनता को मनोरंजन प्रदान करने के साथ–साथ हमें शिक्षित करने और जानकारी प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इसमें फिल्म संगीत, हास्य नाटिकाएँ, लघु नाटक और कत्थक आदि भी प्रसारित किये जाते हैं। 28 मई, 1995 से समाचार सेवा प्रभाग ने एफ.एम. चैनल पर भी समाचारों का प्रसारण आरम्भ कर दिया हैं। शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया जाता है। गाँव–कस्बों के छात्रों को स्तरीय शिक्षा देने के लिए भी बहुत कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं।

प्रथमतः शैक्षिक पाठकों का प्रसारण ब्रिटन में 1924 में आरम्भ हुआ। परवर्ती काल में से प्रसारण उत्तर अमरीका व पश्चिम यूरोप के देशों में भी होने लगा।जापान में 1931 में, आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में 1932 में स्कूली शिक्षा के कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे। भारत में सन् 1938 से स्कूली शिक्षा के प्रसारण की शुरूआत हुई। स्कूली शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा के कार्यक्रमों हेतु परामर्शदाताओं का एक मंडल बनाया गया। सम्पूर्ण सहयोग और प्रतिनिधित्व से शैक्षिक प्रसारण का विकास व सहयोग निरन्तर बढ़ा। इसमें अध्यापक, शिक्षाशास्त्री, अधिकारी, अध्यापक संघ प्रतिनिधि आदि सम्मिलित किए गए।

रेडियो शिक्षा के विविध आयाम :

➢ स्कूली शिक्षा :

बच्चों के स्कूली शिक्षा के लिए रेडियो द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों को प्रसारित किया गया और इसका परिणाम सकारात्मकरहा है।नवम्बर, 1937 में पहला स्कूल कार्यक्रम कोलकत्ता से शुरू किया गया। इसका विस्तार, 1938 तक कलकत्ता, दिल्ली, चेन्नई शिक्षाके कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे। केन्द्रों से शिक्षा पाठ भी प्रसारित होते थे।

➢ उच्च शिक्षा :

उच्च शिक्षा की प्रगति हेतु रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का समर्थन किया गया। आकाशवाणी 'दिल्ली' केन्द्र ने 1966 में '' यूनिवर्सिटी ऑफ दा एयर '' से दिल्ली विश्वविद्यालय के पत्राचार पाठ्यक्रम छात्रों के लिए प्रसारण प्रारम्भ किया। इस कार्यक्रम में कला व वाणिज्य विषयों के समाचार हिन्दी व अंग्रेज़ी के चालीस मिनट के पाठ प्रसारित किए जाते थे । विश्वविद्यालय अध्यापकों द्वारा पाठ तैयार करके , हिन्दी व अंग्रेज़ी के अलावा राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास, संस्कृति, उर्दू , पंजाबी विषयों से संबंधित पाठ भी प्रसारित किया जाता था। दस से बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों हेतु दिल्ली केन्द्र से उनके परीक्षा के पूर्व

पुनरावृत्ति पाठों का प्रसारण भी करता है। इससे छात्रों के लिए स्कूल में पढ़ाए जाने वाले पाठों का महत्वपूर्ण पूरक रूप में सहयोग मिलता है।

छात्रों के साथ ही शिक्षकों की कठिनाइयों के निवारण के उद्देश्य से आकाशवाणी के कई केन्द्र ' शिक्षकों के लिए ' कार्यक्रम भी प्रसारित करते हैं। इन समस्त कार्यक्रमों के लिए शिक्षा अधिकारियों, शिक्षकों व राज्य शिक्षा संगठनों को सहयोग प्रदान किया गया है। उल्लेखित कार्यक्रमों को 'टेप–रिकार्ड' द्वारा विभिन्न स्कूलों व संस्थाओं में रिकार्ड कर लिया जाता है और आवश्यकतानुसार इसे प्रयोग किया जाता है। इसके फलस्वरूप प्रभावी रूप से व्यवहार में लाने में भी सफलता हुई। विभिन्न कारणों से अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ दिए छात्रों के लिए भी, साक्षरता अभियान के द्वारा रेडियो प्रसारणों का लाभ मिल सकता है और इस प्रकार सर्व–शिक्षा अभियान को गति दी जा सकता है। दूरदराज के क्षेत्रों में रेडियो शिक्षा सार्थक साबित किया है। इस प्रकार रेडियो शिक्षा जगत में अपना विशिष्ट सहयोग प्रदान कर सकता है।

दूरदर्शन :

शैक्षिक कोटि के टी.वी. कार्यक्रम, खासकर बच्चों के लिए बहुउपयोगी है। वर्ष 2001 तक की स्थिति के अनुसार टी. वी के ग्रामीण दर्शकों के बीच शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रभाव क्षेत्र 14 वर्ष तक के आयु वर्ग में 54.70 प्रतिशत रहा। वर्ष 2005 के शुरू में इस प्रतिशत में काफी वृद्धि थी। शैक्षिक फिल्में ग्रामीणजनों को स्वस्थ व जागरुक मानस बनाने में भी मदद करती हैं। वर्तमान समय में कई राज्यों की राजधानियों से शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। परिवार कल्याण, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य उपभोक्ता–अधिकारक, पर्यावरण आदि से सम्बन्धित सूचना कार्यक्रम भी दूरदर्शन प्रसारित करता है। दूरदर्शन ने केवल न्यूज नेटवर्क सी. एन.एन से समझौता करके दर्शकों को चौबीस घंटे समाचार व

समसामयिक विषयों के कार्यक्रम प्रसारित करने का कार्य भी आरम्भ कर दिया है।

संगणक :

संचार व्यवस्था के नये–नये रूप हमारे सामने आ रहे हैं। इसका एक रूप संगणक है। एक सर्वेक्षण से यह बताया है कि बच्चे इंटरनेट पर ज्यादा से ज्यादा समय न्यूज पेपर, मैग्जीन, किताब पढ़ने में बिताते हैं। कुछ सूचना प्रौद्योगिकविदों का मानना है कि इंटरनेट बच्चों में समुचित विकास करने में एक अच्छा टीचर, अभिभावक की भूमिका निभा सकता है और पाश्चात्य देशों में निभा रही है। बी.बी.सी के शिक्षा निदेशक माइकल स्टेवेन्शन का मानना है कि इंटरनेट एक आदर्श टीचर हो सकता है यदि हम उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर पाते हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक विकास पर समुचित ध्यान होना चाहिए। भावनात्मक विकास से प्राण ऊर्जा शक्ति का विकास होता है, छात्रों की चेतना में समता, सहयोग और न्याय पर आधारित भावना के अंकूर फुटेंगे, उनमें ऐसे संस्कार पड़ेंगे जिससे दृढ़ निश्चय की क्षमता प्राप्त होगी। इसमें जनसंचार माध्यमों का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। बदलते विश्व की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ये परिवर्तन अनिवार्य भी हैं।

2.4 शिक्षा की चुनौतियाँ और पौराणिक एवं आधुनिक संचार माध्यम

शिक्षा की जड़ कडवी है, पर उसके फल मीठे हैं।

– अरस्तु[15*]

शिक्षार्थी को शिक्षा–प्राप्ति के उद्‌देश्य का यदि ज्ञान न हो तो उसकी स्थिति पतवार–विहीन नौका के समान होगी जो लहरों के थपेड़े खाती हुई तट की ओर बहती जा रही है। अनुभव को विकसित, परिवर्तित और संशोधित करना ही शिक्षा का उद्‌देश्य है। सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में परिवर्तन

आने के फलस्वरूप शिक्षा में भी आवश्यक परिवर्तन होगा। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ऐसे नागारिकों का निर्माण करना है जो देश का कल्याण कर सकें और अपने संकुचित हितों को व्यापक हितों के लिए बलिदान कर सकें। छात्रों में ऐसे संस्कार विकसित करने होंगे जिससे नैतिकता फलित हो सके। अगर संस्कार के बीज अच्छे हो तो फल भी मीठा होगा। आरंभ में ही संस्कार के बीज बोने चाहिए। छात्रों में ऐसी रुचि विकसित करें जिससे उनके व्यक्तित्व में बदलाव होगा।

इक्कीसवीं शताब्दी शिक्षा में क्रान्ति का युग है। शिक्षा सम्बन्धी पुरानी धारणाओं का अमूल परिवर्तन हो रहा है। वैज्ञानिक प्रयोगात्मक और मनोवैज्ञानिक खोजों के अनुसार पाठ्य–क्रम, शिक्षण विधियाँ और स्कूल –प्रबन्ध में भारी उथल–पुथल हुई है। शिक्षा के नवीन प्रयोग हो चुके हैं जिनके आधार पर विशेष पद्धतियों जैसे– मोटेंसरी पद्धति, बालोद्यान– पद्धति, प्रोजेक्ट पद्धति, डाल्टन–पद्धति, बेसिक पद्धति आदि का सूत्रपात हुआ है।

श्रेष्ठ परम्पराओं, मान्यताओं एवं आदर्शों को पुनः स्थापित करने के लिए विद्यालय के माहौल को संस्कारयुक्त बनाने की आवश्यकता है। देश में आनेवाली नई पीढ़ी को ऐसे तैयार करने की आवश्यकता है जो भ्रष्टाचारविहीन भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों की पोषक होनी चाहिए और पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण न करे। आज छात्रों में ऐसे संस्कार डालने की जरूरत है जो उन्हें प्रमाद एवं आलस्य से दूर रखें, सबको स्नेह करें, बड़ों को यथोचित आदर दें, अपने समय का सदुपयोग करें, पर्यावरण के प्रति सजग बनें, नशीली वस्तुओं से दूर रहे, समय से स्कूल पहुँचें और उनकी तार्किक क्षमताओं के विकास होने का समुचित माहौल उन्हें प्राप्त हो, गृहकार्य स्वयं नियमित रूप से पूरा करें, रटने को प्रोत्साहित न किया जाए, मौन रहकर मनन और चिन्तन करें, सोने से पूर्व दिनचर्या की समीक्षा करें।

शिक्षा के कार्य :

- शिक्षा के द्वारा आत्मनिर्भर बनाना।
- शिक्षा द्वारा नागरिकता के प्रशिक्षण हेतु विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों की व्यवस्था करना। इससे उत्तम नागरिक बनाने में सफल होगा।
- शिक्षा द्वारा वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करने में सहयोग देना।अनुभवों के आधार पर समाज के पुनर्गठन तथा पुननिर्माण में सहायक होना।

सच्ची सीख :शिक्षा वह चीज़ है जिसे हर व्यक्ति अपने लिए खुद हासिल करता है। हमारा समाज चाहता है कि स्कूल बच्चों के लिए है और उनके लिए तीन प्रमुख बातों पर ध्यान दें :

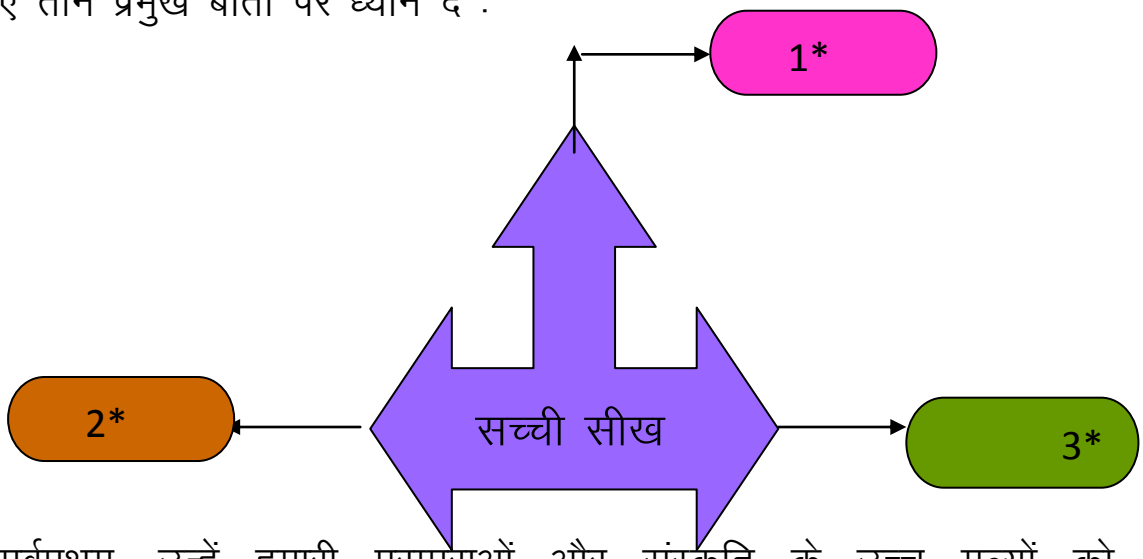

1*सर्वप्रथम, उन्हें हमारी परम्पराओं और संस्कृति के उच्च मूल्यों को सिखाना।**2***द्वितीय, बच्चे जिस दुनिया में जीते हैं उससे उन्हें अवगत कराना। **3***तीसरे, बच्चों को किसी रोज़गार और यदि सम्भव हो सके तो सफलता के लिए तैयार करना।

स्कूल ऐसी जगह हो जहाँ जाकर लोग वह सब खोज सकें जो वे खोजना चाहते हैं और अपना उन कुशलताओं को विकसित कर सकें जिन्हें वे विकसित करना चाहते हैं। शिक्षा की अनन्त राहें हैं, सीखने वाला अपना पथ खुद खोजने, चुनने, बनाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हो।

उनके पास शब्द और ऑकडें भले ही हों, परन्तु खिलाड़ी के पास एक मॉडल होता है। जो असल में काम करता है, जो उसे बताता है कि हवा में उछलती गेंद कहाँ पर जाकर गिरेगी और वास्तव में यही सच्चा ज्ञान है।

शिक्षा में संप्रेषण की प्रभावशीलता:

- ❖ संप्रेषण सामग्री स्पष्ट, संक्षिप्त व अपने–आप में पूर्ण होनी चाहिए जिससे गुणवत्ता बढ़े।
- ❖ संप्रेषण एकतरफा न होकर परस्पर सतत रूप से होने चाहिए।
- ❖ भाषा व शब्दों का चुनाव करते समय उस पर पड़ने वाले प्रभाव का पूर्वानुमान कर लेना चाहिए।
- ❖ संप्रेषण हेतु विशेषज्ञों से परामर्श व सहयोगियों से विचार–विमर्श करना उचित रहता है।
- ❖ प्रभावी संप्रेषण के विविध साधनों/माध्यमों का उपयोग शिक्षा के आवश्यकतानुसार होना चाहिए।

साधन	माध्यम
स्वयं,पत्र,तार, टेलिफोन, फैक्स।	मौखिक,लिखित,तकनीकी–टेलिफोन,फैक्स, ई–मेल, सांकेतिक संप्रेषण।

समय–समय पर यह भी ज्ञात होना चाहिए कि संप्रेषण कौनसा, किस प्रकार के कार्य निष्पादन के लिए प्रभावी रहा है।

☆ भाषा शिक्षण एवं वाचन को प्रभावशाली बनाने के लिए टेपरिकार्डर, लिंग्वाफोन–रिकॉर्ड–फिल्मस् तथा फिल्म–स्ट्रिप्स आदि का प्रयोग करते हुए सम्यक् ज्ञान प्राप्त करते हैं। उच्चारण शोधनोपरान्त वे स्ववाचन पर भी बल देते हैं।

संचार माध्यम भी शिक्षा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य करता है। विभिन्न संचार माध्यमों से छात्रों में पाठ के प्रति रुचि पैदा करने में बहुत प्रभावशाली है। अध्यापक को बालक की ज्ञानेन्द्रियों पर आधारित करने से अध्यापन कार्य सरल व उपयोगी हो जाता है।

शिक्षा के लिए श्रव्य दृश्य माध्यमः

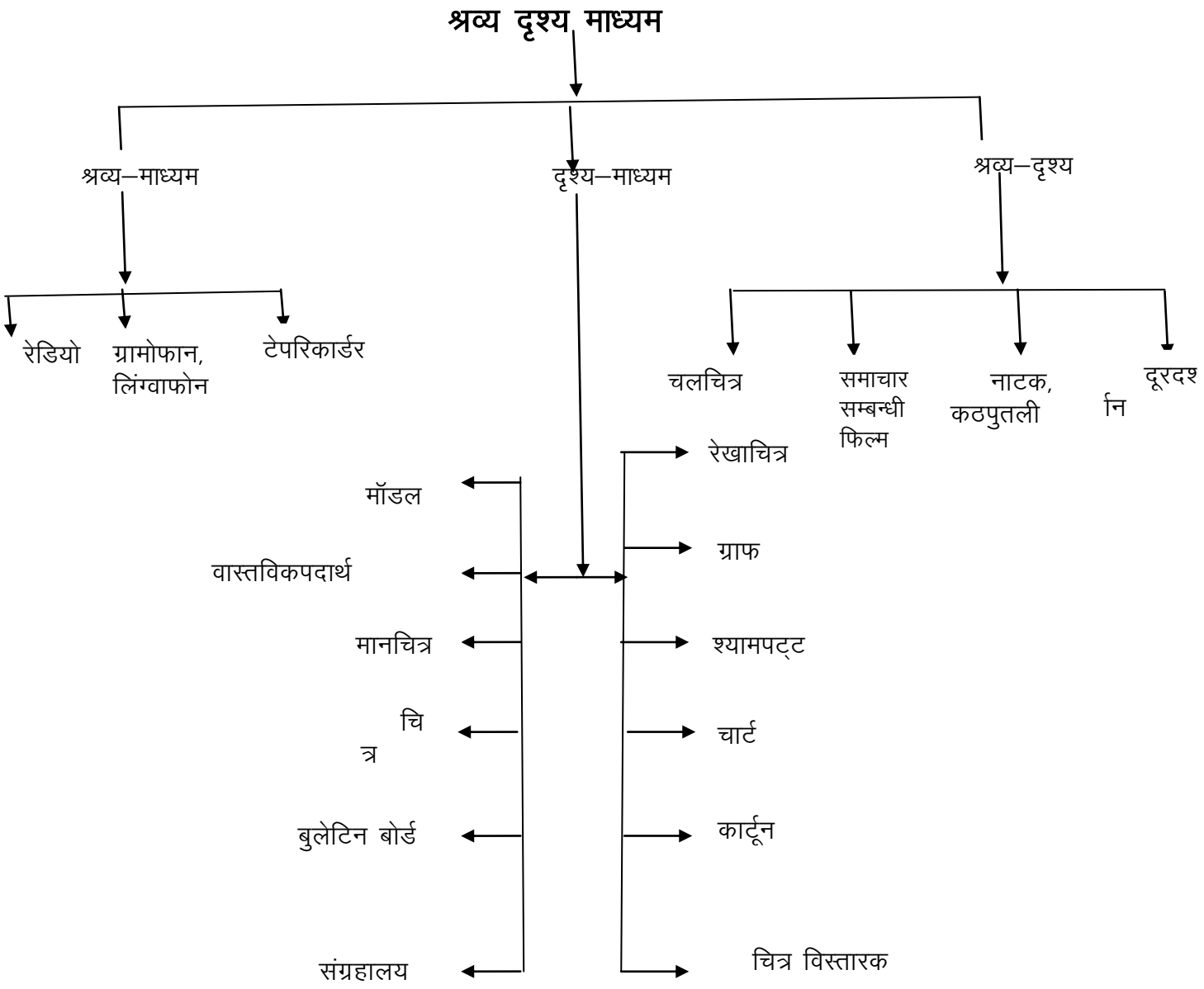

संसाधन सामग्री का वर्गीकरण निम्न प्रकारहैं–

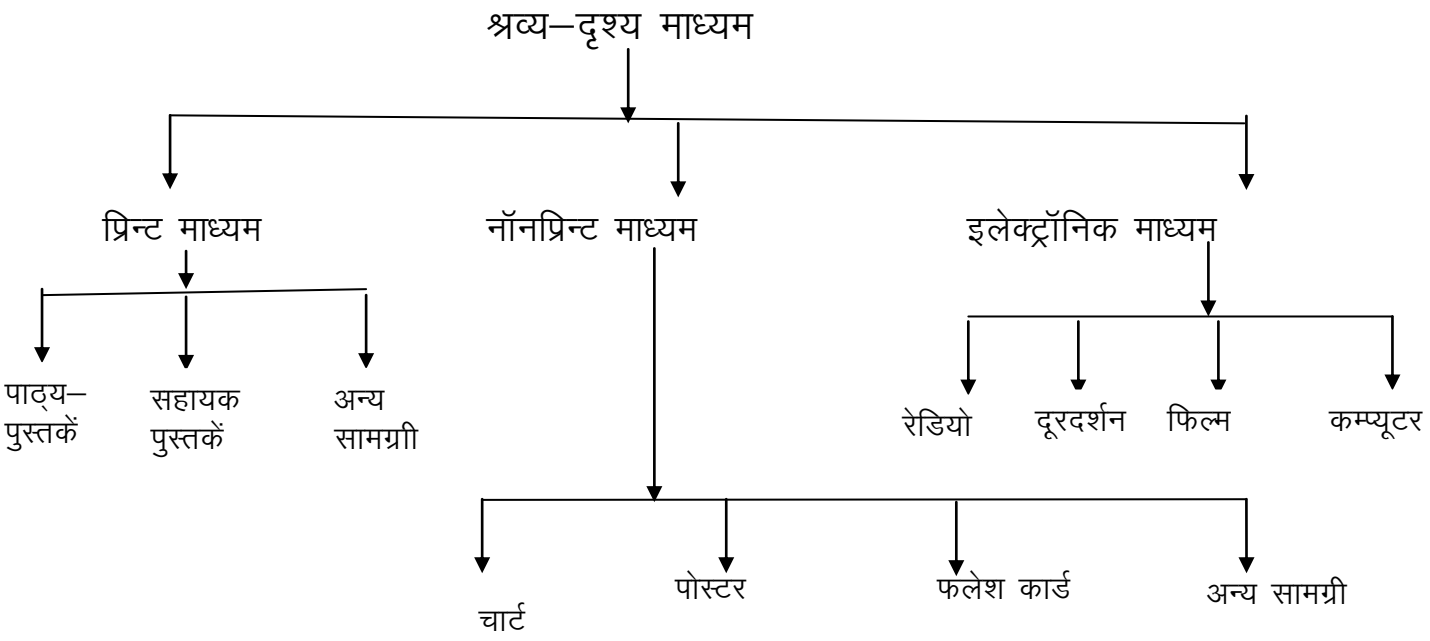

इसके साथ ही बच्चों का कुछ नैतिक–विकास की क्रियाएँ–

- ❖ महान् पुरूषों की जीवनियाँ एवं आत्मकथाएँ पढ़ना। सत्संग, योग।
- ❖ विभिन्न भाषा कथाएँ संस्कृत के पंचतन्त्र, हितोपदेश, हिन्दी की अनेक लेखकों की रूसी एवं अंग्रेज़ी भाषाओं की कहानियाँ।आत्मालोचन एवं परीक्षण, निर्धारण जिनमें कमजोरियों एवं शक्तियों को दर्शाया गया हो।

बच्चों के जीवन में प्राथमिक विद्यालय का चरण ही वह समय है, जब उसमें मूल्यों की शिक्षा का बीज सूक्ष्म रूप से बोया जा सकता है। उस समय मस्तिष्क भी बहुत ग्रहणशील होता है। यदि स्कूल में समर्पित शिक्षकों के हाथों में इस बीज को पोषण मिले, फिर वे बच्चे के स्कूली जीवन में उचित अंतराल पर मूल्यों की शिक्षा देते रहें, तो आसानी से राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में आधी लड़ाई जीत ली जाईगी। संक्षेप में यह बता सकते हैं कि शिक्षा से ही असीम आनंद, असीमज्ञान और अनुभवी बनाने का रास्ता भी मिलता है। इससे ही बच्चों का व्यक्तिगत निर्माण भी संभव है।

संदर्भ एवं सहायक ग्रंथ सूची––द्वितीय अध्याय

*[1]शिक्षा की आवश्यकताएँ, डॉ. नरेश कुमार, पृ.सं.9 ।

*[2]आधुनिक शिक्षामनोविज्ञानम्, डॉ. लोमान्यमिश्रः, पृ.सं.14।

*[3]शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत की शिक्षा, डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा, पृ.सं.4।

*[4]http://www.brainyquote.com/

*[5]शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत की शिक्षा, डॉ.महेन्द्र कुमार मिश्रा, पृ.सं.19।

*[6]नारी सशक्तिकरण, डॉ. हरीदास रामजी शेण्डे ' सुदर्शन ' , पृ.सं. 16 ।

*[7]प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति, कृष्णकुमार, पृ.सं.4।

*[8]आधुनिक हिन्दी निबन्ध, डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित, पृ.सं.305।

*[9] वैदिक शिक्षा मीमांसा , डॉ. भास्कर मिश्र, पृ.सं.29।

*[10]काणे, पांडुरंग वामनः धर्मशास्त्र का इतिहास प्रथम भाग, पृ. सं. 250।

*[11]शिक्षा दिशा और दृष्टिकोण, डॉ. शंकर दयाल शर्मा, पृ.सं.107 ।

*[12]भारतीय महापुरुषों के शिक्षाप्रद विचार, डॉ. हरिवंश अनेजा, पृसं.145।

*[13]शिक्षा सिद्धान्त एवं आधुनिक भारत की शिक्षा, डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा, पृ.सं.144।

*[14]शिक्षा शिक्षार्थी और शिक्षक, डॉ. रामपालसिंह, पृ.सं.16 ।

*[15]www.Hindiquotations.com

❖ आधुनिक भारत में शिक्षा, हरिश्चन्द्र व्यास, कैलाशचन्द्र व्यास, आदर्श प्रकाशन मन्दिर, दाऊजी रोड़, बीकानेर , 2007

❖ पत्रकारिता का इतिहास, एन.सी.पंत, तक्षशिला प्रकाशन, दरियांगज, नई दिल्ली–110002, 2002

❖ पत्रकारिता सिद्धान्त एवं स्वरूप, डॉ. रमेश त्रिपाठी, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली–110002, 1995

❖ प्राथमिक शिक्षा ज्योति, डॉ. संतशरण शर्मा, अमर प्रकाशन, मथुरा–281001, 2010

❖ बाल–शिक्षण की आदर्श विधियाँ, निर्मला कुलापति, जनवाणी प्रकाशन, प्रा. लि, दिल्ली–110032, 2000

❖ बढ़ती जनसंख्या और शिक्षा, भारतेन्दु मिश्र विक्रम प्रकाशन, 2001

- भारतीय शिक्षा प्रणाली, निशा द्विवेदी, डॉ. गोपाल कृष्ण शेवड़े, मनीष प्रकाशन, दिल्ली– 110053, 2005
- भारतीय शिक्षा का इतिहास 'स्वतन्त्रता पश्चात्, मुंशी राजा, मीरा पब्लिकेशन, दिल्ली–110092, 2010
- राष्ट्रीय शिक्षा का आदर्श, आचार्य काका साहब, कालेलवर, गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली– 110002, 2006
- व्यवाहारिक पत्रकारिता, डॉ. मुश्ताक अली, साहित्य संगम, इलाहाबाद, 2007
- शैक्षिक परिवर्तनों की परख, जे.एस. राजपूत यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- शिक्षाः वर्तमान सन्दर्भ में, प्रो. रामशकल पाण्डेय, विकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद, 2010
- शिक्षा, समानता और समाज, बाल्मीकि महेता, आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकुला –134113 हरियाणा, 2012
- शिक्षा की बजाय, जॉन होल्ट, अंग्रेज़ी से अनुवाद, सुशील जोशी, एकलव्य, ई– 10, बीडीए कॉलानी शंकर नगर, भोपाल–462016
- शिक्षा कैसी हो, पवित्र कुमार शर्मा, ग्लोबल एक्सचेंज पब्लिशर्स, 2007